



नः ॥ १ ॥ अथ तस्य विद ॥ अथ काय च तस्य विद
यतिपतिमानया सुकया जना ॥ ॥ २ ॥
विनिकालिक ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
तिनाया यतिः ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

१ मास॥ क द्वा॥ अष्टादश॥ धृतिनाया पवान्न
ति विधान॥ गुतागुती॥ २ मन्त्रवर्णन इव
३ वृत्त॥ वेष्म व स्थिति नाया वा न चटि रुह॥
४ धृतियादस्त॥ थ० सु न्या॥ थका॥ अध सवे
कार्य याय मतः स सिद्ध॥ ५ अवत समान
सयात सा ल य मा नी वा ला य मा नी व॥ ६ का
र स या त सा कार्य या त सा ह निक र य
क व म्पु न्म म रु व॥ ७ म्पु ग थ च टि स ता
व कं या य मा न द्वा कार्य सिद्धि र य रु बी॥
८ दिन या सिं दि न थ उ त म या कि ध य थ स
म सं कार्य वि वा न या द। घ टि नान

आदिदात्रयक॥ आदिहकाय॥ नागपूजाया
 ना. न. उ. ह. वि. म. म. म. म.
 म. म. म. म. ॥ म. तिथि. १. १०॥ म. व. न. ॥ म. व.
 तिथि. १. ८. १०॥ १३॥ १५. वा. व. ॥ म. व. म. व. म.
 १३॥ वा. न. १ ॥ ह. उ. ॥ ॥ तिथि. १०. १५
 वा. न.

दवपाग्रनः दिन इति

उ. ३. ना. म. ह. वि.

म. न. म. म. म. म. म.

तिथि. ५. १०. १५

वा. न. १. ५. ६. न. न.

१. ३. ६. १२

वा

आदि का दाय॥ २. सिधन दाय॥ २. कि वाइ काय॥

कुती का. पृथ॥ असु निज. न. न. न.

आहिनिः उ. ग. ॥ म. म. म. वि. सा. वा. वा.

स्वाति २॥ तिथि॥ म. वा. तिथि ३॥

१॥ २॥ ५॥ ७॥ १०॥ १३॥ १५॥

१०॥ १॥ वा. न. ॥ वा. न. ॥ १॥ २॥ ३॥

१॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥

न. व. ति. तिथि. १॥ २॥ ५॥ ७॥ ध. न. जो. सि.

एतन्मरकाया॥ २५॥ विविदीत॥
 शक्रो धन्यः॥ मृगमित्रः सद्यः शक्तिः
 मत्तसिवाः विलासा॥ नान्नाद्यः हस्तः ह्यति
 प्रकाः हस्तः पुनर्वसु॥ २६॥ उग्ररुद्रगति
 नवतीः जसुनिः तिथि ॥ २७॥ उग्ररुद्रगति
 ३॥ २७॥ १॥ १॥ ॥ तिथि ॥ २७॥

शक्तियात्रायुतामत्रायुतास्य॥ नमस्तु सफमस्तु अस्तु
 मस्तु पंचमस्तु अतिथानस्तु अहग्रहानां अथवा
 षनिता॥ अथवा वस्तुमाषमस्तु दशमस्तु उकाद
 मस्तु वस्तुमाषानि अथवा शक्तियात्रा॥ मतिश्वनताम
 सवानता अथवा षनता अहग्रहनंतामस्तु नमनि
 ता कस्तुसमशानिता मृगशिरसा॥ नमन्याक रु
 तीय पंचम सफम उकादश षम अतिथानस्तु
 वस्तुमाषानि आदित्य सहस्यति वृध अतिथानि
 ता विवाहकर्मयाय चनरुता॥ पंचम नतामस्तु कस्तु
 स अहग्रहानता धधनयया॥ इतीय दशम उकाद
 श अहमपाद ३ पंचमस्तु नतामस्तु पाद २ सफम
 मस्तु ३४ सनिता

प्रतिदश नडामि पूर्व बुक्तायनी ॐ उदवना न
 सिर्गागरेव व. अनियत्र कान पूजा ॥ १ ॥ पंचमि
 यादसि दकि (ह) वा नाही कपान रेव व. रुर्मदवता
 वृहस्पतिवान पूजा कान ॥ २ ॥ पश्चिम रवि ॐ द्या
 पनि नूरुत रेव व. वनक्षनाजा वष्टमी वतुदसि न
 मत्र पूजा कान ॥ ३ ॥ उरुन नूडायनी श्वरु रेव व
 पीन रुयनदवता द्वि मिया दम मि कान आदि
 स वा न पृ ६ गाति न ॥ कान ॥ ४ ॥ २ ॥ ५ ॥ मि
 ५ वा मि ॥ ६ ॥ ला न महा ल मि ॥ दि व न रेव व
 ७ ॥ दि न ॥ कान या नी

५

२० नमः श्रीवली काये ॥ नृप नृवमायी का
 वल्लि सिखन ॥ ॥ मालका विधि स्तापना धून
 काठा श्रीसूर्यार्घ्य गुन्या दार्घ्य पंचगव्य ॥ १ ॥
 धन धन पूजा हा न स क ल्य ॥ कान हा ॥ नृमूक
 नाम ध्वज स्यः नृगृह नाम ना ॥ प्रसन्न कारः ॥ नृ
 गति प्रग दाय अनि दाय नडा ग्रहादि क्र प्रया व द
 य प्राप ॥ नृगृह स्ति न प्रग अनियत्र रुद्र या व द
 य स्ताना नृय प्राप काम नार्थ ॥ नृय निगृह भा किन्या
 दिनाना दाय नाना पद्रवादि भा किर्थ पूर्व क नाग
 ॥ १ ॥ क रुय स क ल्य पी जानि वा न नार्थः ॥ नृय ना ना ह
 ॥ २ ॥ दि म ना रि मि न काम ना या नृरु स ह दार्थ

आपनम्यस्वन पनम्यस्वनी. नृदहैवव. नृदमा
 हकाशीत्यर्थ. उदनमयं प्रतमर्हि. अनिश्चनक
 उद्यानादि. नडावल्याचन. नृमूकनामवलितय
 हा. पूष्याशीहनपूजाकर्तु. दूदपूष्याशननसंक
 लययामहं॥ धनधययाय॥ ॥ रगवसमयस
 त्वविद्यानाशनमामुग॥ कर्तुमिच्छामिहैनाथ. प्र
 तिस्तोत्रदयाममः. मिष्यानामनृकपाय यम्याः
 कं पूजनायवः. नमवरगतस्यरगतवप्रभरकर्तु
 मर्हति॥ यथाहिसर्वसंवृद्धाधुमिगवसंस्ति
 तामायादव्यायथाकृको. नदगिष्टतिवृहाक
 ती. खवाफासर्वसंवृद्धावाधिसत्वायसर्वदा

दूहसमयसत्त्वहिसानिधुमर्हति॥ ॥ धनज
 प॥ धनध्यान॥ ॥ उंचलमहादेवीध्यायह
 गवतीगीवा. नफचामिकनारोचविंशकाटिसम
 पूराभायीनारुक्तलीहीमाधिनद्रांवावृहासिनी
 : किनिमिद्रुलभनि. कयूननापूराः नत्तमोला
 विविद्यागीहासमोलावसंविनि॥ नृदहादमरुज
 कांकादिव्यवस्तुद्रविताः खजवानानकथावकं
 वज्रारुमधवावना॥ उमनृगूलयाप्रचदक्रिहान
 विष्मनिगाः सदकंधनूहस्तावगजहस्तावत्माः
 हिमा॥ पागनर्कनिहस्तायखत्वाद्रकंगयागकं
 वित्पूडाकथासिद्धिसिंहासनापनिस्तिगा॥
 आपनम्यस्वन पनम्यस्वनी. रगवतीविरावयत्॥ उच

वायव्यदायवश्वाग्रचन्द्रनायकाः यदायवद्वाने
 वेवचन्द्रनायिकाः चिन्ता नमो वायव्यदायवमध्य
 चाग्निप्रगल्भिताः शिवनायककृष्णनीलाशुः
 कायचन्द्रिका ॥ पीतापाशूलाह्वयं शालिठा
 स्थाह्वयिकाः सहिष्वाहनस्तु पूमान्तिनल
 नवमूर्तिर ॥ हस्ताव्याकृतदूर्जानवचन्ति
 उग्रवन्द्यदिकाक्रमातः चवंध्याशामहादेवीर
 गवतीनमस्तु ॥ ॥ श्री या पू ॥ हस्तवती
 कायनमः स्वाहा ॥ हस्तप्रवअयनमः स्वाहा ॥
 हस्तवअग्रयनमः स्वाहा ॥ हस्तवभुनाय

नमः स्वाहा ॥ हस्तवभुनायनमः स्वाहा ॥ हस्तव
 भुवर्धनमः स्वाहा ॥ हस्तवभुनूपायनमः स्वाहा
 हस्तवभुतिवभुनायनमः स्वाहा ॥ हस्तवभुतीका
 यनमः स्वाहा ॥ ॥ पू वा ॥ ॥ हुं मा नूमावर्तु
 संकार्गस्य हस्तकविन्दुकः कामनूपीमहादेवी
 उग्रवअनमस्तु ॥ स. ध. म. जं ॥ थनभुनम
 उल्लनहस्य जितमाधि गलस माध्यापि
 स्वाकृपगा ॥ थनवलिपूजा ॥ कायः ॥ धूपः
 धनकिनक ॥ ॥ हुं मा नूमावर्तुसंकार्ग स्वप्रह
 टकविन्दुकं कामनूपीमहादेवी उग्रवअनमस्तु
 ॥ ॥ मध्यस ॥ थनमद्ययानमय ॥ हुं की श्री हं

माहासानीविघ्ननाशय २३० रुट स्वाहा ॥ ३॥ ॐ
नमः श्रीकसहयाग्निरादिसिद्धि लांकः अवन
नरणीयुं रुट स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ सर्वविश्रमसं
पूरुः सत्त्वार्थकयनगमः विमलखंयद्रुजंवेव घ
नाघनसमृदिनं ॥ सत्त्वयर्थकवस्तुनं कपालम
कृष्णवः जिनवस्मिस्तुनंदहं प्रह्लादसमा संगि
नं ॥ वरुणपथ्यधनं वानं धनं लाजनकामूकः विरा
नां लवयत्वार्यवृद्धयागं वनं स्वयं ॥ ॥ नृपाः पू
॥ स्वाहा वाय ॥ ॐ हं यागमवनाय स्वाहा ॥ ॐ नृपा
नडाकिर्न पन्नमः स्वाहा ॥ ॐ उग्रवन्तु यन्नमः स्वा
हा ॥ ॐ प्रवन्तु यन्नमः स्वाहा ॥ ॐ वंद्यग्रहाय नमः

स्वाहा ॥ ॐ वन्तु यन्नमः स्वाहा ॥ ॐ वन्तु कायन
मस्वाहा ॥ अश्वनी रुद्रणी रुद्रिकायनमस्वाहा
॥ ॐ कायनीय स्वाहा ॥ नृपायनीय स्वाहा ॥ कोमानी
य स्वाहा ॥ वीष्नीय स्वाहा ॥ वानाहिय स्वाहा ॥ ४३
द्रायनीय स्वाहा ॥ चामूद्राय स्वाहा ॥ महानक्षत्राय
स्वाहा ॥ ॐ वज्रवन्तु र्हेनवाय स्वाहा ॥ नृद्रवन्तु र्हेनवा
य स्वाहा ॥ धानवन्तु र्हेनवाय स्वाहा ॥ वीलवन्तु र्हे
नवाय स्वाहा ॥ नलवन्तु र्हेनवाय स्वाहा ॥ विजयवन्तु
र्हेनवाय स्वाहा ॥ कालवन्तु र्हेनवाय स्वाहा ॥ यम
वन्तु र्हेनवाय स्वाहा ॥ अश्वकलनागनाजाय स्वाहा
॥ अश्वकलाय स्वाहा ॥ अश्वपर्वताय स्वाहा ॥ अश्व

मद्याय स्वाहा ॥ श्रुष्टकृपाय स्वाहा ॥ श्रुष्टस्त
नाय स्वाहा ॥ श्रुष्टाय स्वाहा ॥ श्रुष्टाय स्वाहा ॥ व
श्रुष्टाय स्वाहा ॥ श्रुष्टाय स्वाहा ॥ श्रुष्टाय स्वाहा ॥
श्रुष्टाय स्वाहा ॥ वायुय स्वाहा ॥ श्रुष्टाय स्वाहा ॥
॥ पू. मा. ॥ ॥ ॐ मातृगावर्धनसंकासं रवप्ररु
टकविन्दुक. कामवृषीमहादेवीसुवस्तुनम
स्तुते ॥ वलि ॥ ॐ किं नीवन्ति मूकसंकासं. धानद
ष्टहयावहं. उद्धकं विन्द्याक. कृपायं वृहद्
दनः प्रहिवलिपतिगृह २२ ह २ पच २ स्वस्वः
रवाकिं. महाविद्युर्नवनवृष्यं. वलि. पति. गृह २
किं २ रुद्र स्वाहा ॥ अथमा ॥ १ ॥ धनपूर्वव

आयनी पूजा ॥ पीन ॥ किमरु ॥ सुना पापं धुन वृन्द
 अरु सुपंक विरुक्तं वृक्षाया वाहयदवीध्यानपूर्व
 नमस्तुते ॥ मध्य पान ॥ ॐ श्री ह्रीं क्रिपय प्रयाग विष्णु
 नागव २ ईरुट स्वाहा ॥ धूप रुं रुम ॥ ॐ वृक्षाय ह्रीं
 ह्यानि वृक्षलोकं श्रवणन २ श्री धुं वृक्ष रुं रुट स्वा
 हा ॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ वृक्षाय नीपीन वृक्षलोक
 मूर्खा हंसा सनी वदुर्ग रुप्रल्लसिता मल्लरुजायी
 विन्दु पापं वृक्षपन रुजायां अरु सुपंक मनुष्यन
 हंसासन रुकिता श्रीपन म्पन्नी वृक्षाय नीला वय रु
 ॥ न्ना पा पू ॥ रु रुट वृक्षाय नी य रुं रुट स्वाहा ॥
 वृक्षलोक कीय रुं रुट स्वाहा ॥ वरु वनु रुं रुट म रु रुट

स्वाहा॥ हंसाग्निय इरुट् स्वाहा॥ ॐ प्रयोगक
 उपानाय इरुट् स्वाहा॥ वायुकीनागनाजाय इ
 रुट् स्वाहा॥ नागकमवक्राय इरुट् स्वाहा॥ दु
 खसुखनदीनाजाय इरुट् स्वाहा॥ वडग्रहव
 समभनाय इरुट् स्वाहा॥ प्रदिययानडामिय स्वा
 हा॥ नाहिही मृगमिसा भ्राद्राय नमः स्वाहाः॥
 अदिष्टवानाय स्वाहा॥ पू मा जा॥ ॐ ब्रह्मयनी
 पूर्वपीतारामकाववीरुसंरुवा॥ स्वायध्विन्द
 पामुं वः नमस्तु हंसवाहिनी॥ ॥ वली॥ ॐ नमः
 काववीरुसंजानं पूर्वब्रह्मयनीयः रुद्रं वरुं न
 मस्तु सर्वसत्त्वानां केरुमकिपाष्टिकुनू २०० देवली ख
 रखाहि २ ब्रह्मयनी देवीय इरुट् स्वाहा॥ ॐ ध्या॥

धनउरुनसमाहववी पूजा॥ किमह॥ ॐ नमः श्री
 माहववी देवीय नमः॥ ॐ महापूर्वकपालसंवध
 ना तत्पत्रमिभूतनं नोडान्नावाहय देवी ध्यान पू
 ष्यं नमस्तुते॥ मद्यपान॥ ॐ श्री श्री इहकासागिनी
 क्रयविघ्ननाभय इरुट् स्वाहा॥ धूपकपूज॥ ॐ क
 नोडायनी देवी नूड वाक नूवतन २ भीष्टिकुनू इरु
 ट् स्वाहा॥ ध्यान॥ ॐ माहववी स्यनवभूरा हव
 वाहिनी वलुर्लकाधरीः मूलतुगात्यां विन्दुपायं व
 म्रमनतुगात्यां वरुणिभूतधननीयनम्यध्वनीः
 माहववी रावेयगा॥ ॥ श्री पा पू॥ इरुट् न
 डायनीय नमस्वाहा॥ दिव्यरूपीणीय नमस्वाहा॥

ह्यमनीयस्वाहा॥ नृद्वन्द्वहेतवायस्वा॥ काना
 नीकप्रपातायस्वाहा॥ धनांगकृप्यायस्वाहा॥
 मककनागनाकायस्वाहा॥ इवन्नुकायस्वाहा॥ म
 यूनपर्वतायस्वाहा॥ लोहियायस्वाहा॥ सभांग
 नदिनाकायस्वाहा॥ कलंकस्मस्यानायस्वाहा॥
 पूनवत्तूः पूष्यः शूलवायस्वाहा॥ द्वितीयादध
 मियस्वाहा॥ सामवातायस्वाहा॥ नाभियस्वाहा
 ॥ पूः नाः पुः ॥ ॐ माहेश्वरीलघनवन्धुः कका
 नवीजसंरुवा॥ स्वायुधविन्दुपायंवनमस्तुह्य
 बाहीमी॥ ॥ वलि॥ ॐ श्रीकंककाववीजसंजा

मंडलनमाहेश्वरीसर्वविमानां सर्वप्रदानां भक्ति
 कुरुकुरुदस्वाहा॥ ३ ॥ धनश्रुतकिमह॥ ॥
 ॐ नमोऽमीकोमावीदेवीनमः॥ ॐ विदुर्कंभकिह
 संवजयतिरुयमालिका॥ कोमार्यावाहयदेवी
 ध्यानपूष्यंनमस्तु॥ मधुमान॥ ॐ श्रीग्रीहंह
 मरुहासविष्णुनामायकुरुदस्वाहा॥ धूपगुग्गु॥
 ॐ कोमावीसहयोगीउमासाकः श्रवतनरणी
 धुं कुरुकुरुदस्वाहा॥ ध्यान॥ ॐ कोमावीककव
 म्भिरामयूनवाहिनीचतुर्भुजाधवीमूलतुलायां
 विन्दुपायंवः श्रवतनकायाः भक्तिकर्तृकंभुमं
 वाहेश्वरीकोमावीदेवीतावयत्॥ श्रीः पाः पूः

रुद्रकोमारीयस्वाहा ॥ नकुवर्णयस्वाहा ॥ म
 युनवाहनायस्वाहा ॥ म किनामलधनायस्वाहा ॥
 महापात्रधनायस्वाहा ॥ नत्तवन्द्येनवायस्वाहा
 काटहेनवायस्वाहा ॥ मन्त्रयात्रधनायस्वाहा ॥
 मन्त्रबालनागनाजायस्वाहा ॥ नृदगन्धिनदी
 नाजायस्वाहा ॥ गन्धमानयवनायस्वाहा ॥ कर्ण
 रुद्रकायनमस्वाहा ॥ नत्तप्रहावेद्यायनमस्वा
 हा ॥ कर्णपासिदायस्वाहा ॥ काकर्णगनादिय
 नायस्वाहा ॥ अष्टरुहासायस्वाहा ॥ पंचदशक
 पासायस्वाहा ॥ रुनीयात्रकादसीयस्वाहा ॥
 मघापूर्वकालगुह्य उग्रहालायीयस्वाहा ॥ नृ
 गनवाभायस्वाहा ॥ ॥ पू. मा. १० ॥ कुकोमारी

नकुवर्णयस्वाहा ॥ नकुवर्णयस्वाहा ॥ स्वायम्भुविन्द
 पात्रधनमस्तु मयुनवाहिनी ॥ ॥ वसि ॥ ॐ नृ
 लकोमारीममसर्वसुखांशसयस्मानयस्
 वन्धरमयुनासनीद्वीप्रनियत्यष्टदेवलिङ्ग
 रुद्ररुद्रस्वाहा ॥ अधर्मा ॥ ४ ॥ अधर्मेष्टु
 विष्णुवीपूजा ॥ ॥ किन्द ॥ ॐ गजावक्रधर्मवं
 दविष्णुपात्रधनसदाः वेङ्कट्यावाहयदधीष्ठा
 नपूष्यं नमस्तु ॥ मययान ॥ ॐ श्रीग्रीष्मय
 न्द्रियविष्णुनागायस्वाहा ॥ धूपगाल ॥
 ॐ विष्णुविविष्णुलोकसहयोगिनी श्वतनत्र

श्रीध्वंरुद्रंरुद्रस्वाहा॥ ॥ ध्यान ॥ वेङ्कटीस्याम
 बभ्रुलिंगगुरुजगनि. एकमूखाष्टिदया. चतुर्भु
 जास्याविन्द्याष्टके. त्र्यम्बकमूर्त्याः गणेशचक्रध
 रणी. वेङ्कटीद्वयमवयम्॥ भा. पा. पू॥ रुद्र
 टविङ्कटीद्वयमवयम्॥ विष्णुगङ्गीयनम
 स्वाहा॥ उं दिव्यनूपीनीयस्वाहा॥ गुरुजगनी
 यस्वाहा॥ विनयद्वन्द्वनवायस्वाहा॥ कूलिक
 नागनागायस्वाहा॥ क्रौञ्चद्वन्द्वनवायस्वाहा॥
 रुयंतिरुपपानायस्वाहा॥ नाकसाधियमयस्वा
 हा॥ प्रकाटिहकायनमस्वाहा॥ हंसकूटपर्व
 नायस्वाहा॥ हंसवर्मानदीनागायस्वाहा॥ ल

श्रीवक्रसंभानायस्वाहा॥ वसुथी. द्वादशीय
 स्वाहा॥ हस्ताविनायस्वाहा॥ स्वागियस्वाहा॥ वू
 ह्वनायस्वाहा॥ ॥ पू. ना. पु॥ उं विष्णुविष्ण
 मनेत्रपटकानवीरुसंरुवा. स्वायूष्मविन्द्याष्ट
 व. नमस्कगुरुजगनी॥ ॥ वलि॥ उं नेत्रपटवेङ्क
 टीगुरुजगनीप्रणियत्यममसर्वगङ्गासय २
 श्रीध्वंरुद्रंरुद्रस्वाहा॥ यधर्मा॥ ॐ निविष्णुवी
 पूजा॥ ५ ॥ अथ दक्षिणवागहीपूजा॥ किमहं न कृत
 ॥ उं पाशंरुद्रपनाह्यौवनककायवविन्दुकी॥ का
 लास्यावाहयंदवीध्यानपूर्यनमस्तुते॥ मयथा

॥ ॐ श्री कंहकालाग्निप्रियविघ्ननासाय
 कंहकालाहा ॥ धूप ॥ ॐ वावाहीरुगनाक
 वनवदभीष्टकुरुकुरुट्ट्याहा ॥ ॥ ध्याना ॥
 ॐ वावाहीनकास्यवाहमेवेदनसन्निहः ॥
 कमरवाधिनशी वतुर्गुजाधनीमूलरुजाया
 विदुषां च ॥ अपनरुजायां स्वप्ररुट्टकध्या
 निशीमहीखाभनक्तिता ॥ ॥ श्री पा. प्र ॥
 कुरुट्टवावाहीदवीनमः स्वाहा ॥ विरुयवदुल
 नवाय स्वाहा ॥ कपालरुनवाय स्वाहा ॥ ॐ का
 लरूपिणीय स्वाहा ॥ ॐ महीषासनीय स्वाहा ॥

उल्काकरेनवाय स्वाहा ॥ यमनागनाजाय स्वाहा
 ऊर्मदवनाम स्वाहा ॥ उर्वथा मयवताय स्वाहा ॥
 मोननाथाय स्वाहा ॥ वनहकाय स्वाहा ॥ वदप्र
 एनदीनाजाय स्वाहा ॥ कलंकरीषासम्भना
 यरुट्टर स्वाहा ॥ प्रकास्यक्रमपायाय स्वाहा ॥ सि
 धियासिद्धाय स्वाहा ॥ हानप्रलवेयाय स्वाहा
 पक्षे मिथ्यादभीय स्वाहा ॥ विष्णुवाटाश्रुत
 माटाश्रुताय स्वाहा ॥ हहस्यनिवानाय स्वाहा ॥
 ॥ ॥ पू. ना. ॥ वावाहीयाम्यनकाहानकान
 वीरुसंरुवाः स्वायुधविदुषां च ॥ नमस्कृतः
 हीषासनी ॥ ॥ बलि ॥ ॐ वावाहीयनद्यानरु

हा॥ भगवती यवनाय स्वाहा॥ नेत्रहात्री नदी नाजाय
 स्वाहा॥ मूसपूर्वाद्याय स्वाहा॥ पंचमिवगुर्दसी
 य स्वाहा॥ शुक्रवायाय स्वाहा॥ **मू. ना. तु ॥ ॐ नू**
 आयसीयवपी नारायकाववी ज संखाः स्वाय
 धविन्द्याय के. नमस्कृ गक्रवाहिनी॥ वसी॥ ॐ
 पकाववी ज सकातं ॐ आयनी महादवी. सकस
 पविवावसहीत ॐ स्वसिगृह २ सुं २ पीव २
 जजमानस. सर्वविघ्नहन २ दह २ यव २ रुं २
 ईरुट स्वाहा॥ **यधर्मा ॥** ॥ **अथ वायव्यपूजा**
 ॥ ॐ नमः श्रीवामुद्राय॥ किमरु॥ ॐ व्याघ्रवर्म
 कटिवर्ध. खज्ररुटकविमूर्क. वामुद्रावाहयद

वीधनपूर्यनमस्तुते॥ मध्ययान॥ ॐ श्रीं
 हः देवीकाटक्रयविघ्ननाशय ईरुट स्वाहा॥
 धर्प॥ ॐ यवामुद्राकंकावनीपदवी. भूवतनर
 भाघ्रुं नरुं रुट स्वाहा॥ ध्यान॥ देवीकाटिकः
 वायुकोलायमाकालवयी ० क॥ उन्नविंशक
 पालन. इलुवंगालनसह॥ कालवन्द्य रेवव
 न. भूतकनागसंशत॥ उद्भवसहक्र. नगुग्री
 पर्वतग. धेवव. रयानकस. भनधालांधक
 सहिकं॥ सुवर्णप्रवेष्टयूक. सिक्कननावि
 धनव॥ ॐ यवामुद्रानकवर्धुला. कृष्णांगी
 प्रमासनी. पिंगलाधकिगीत्रकमूखा. वधुर्

कामरुद्राख्या. विन्द्यापंच अथ नरनाख्या क
 र्तिक पानमृगंवा. पुनासनस्किगा॥ अ. पा.
 पू॥ ॥रुद्रुचामुद्राय नमस्वाहा॥ कंकावच
 (मुस्वाहा॥ कालिकाय स्वाहा॥ धीवच (मुस्वाहा
 ॥ कपासु रेंववाय स्वाहा॥ पुनवाहनाय स्वाहा॥ उ
 मरुस्वाहा ॥ धनाय स्वाहा॥ कालच पु रेंववाय उ
 स्वाहा॥ अनकनागनाजाय स्वाहा॥ कंकावचूयी
 धीय स्वाहा॥ गभीनाय स्वाहा॥ देवकीर्तिय स्वा
 हा॥ श्रीयर्वगाय स्वाहा॥ उद्भव नृकाय स्वाहा
 नीववामानदीनामाय स्वाहा॥ देवकाटिकुण्या
 नाय स्वाहा॥ धावांधकस्सुखानाय स्वाहा॥ नानी

पासिदाय स्वाहा॥ सुवर्णप्रणवेदाय स्वाहा॥
 सफमिश्रमावासिय स्वाहा॥ अक्षय धनस्वाय मगरि
 स्वाहा॥ अनिश्चयवानाय स्वाहा॥ ॥ पूना ॥
 कुं वामदावकवायूवायूवा. यकाववीरुसंरु
 वाः॥ स्वायूधविन्द्याय केनमस्तु पुनवाहिनिः॥
 वलि॥ यकाववीरुसंक्रान्तं वामदादवीसुकलय
 निवानरा. रुद्रदेवसिगुकर गुर्गुर पिवरु रुमा
 नस्य सर्वावेद्य हनरदहरपवर हंरु रुंरु रुद्र स्वा
 हा॥ ॥ रुद्रिवा मुद्राद्वीपूना॥ अथमाहासकी
 पूजा॥ ॥ किमरु॥ ॥ रुद्रिवा मुद्राद्वीपूना॥ अथमाहासकी
 पूजा॥ ॥ रुद्रिवा मुद्राद्वीपूना॥ अथमाहासकी
 पूजा॥ ॥ रुद्रिवा मुद्राद्वीपूना॥ अथमाहासकी

मस्तुत ॥ मययाना ॥ ॐ श्रीगौरी हं हं वलीकादवीः
 रुद्रविघ्ननाशाय हं हं हं स्वाहा ॥ धूप ॥ ॐ महान
 श्रीगौरीनाक भूवतनरगाद्यं कुरु हं हं हं स्वाहा
 ॥ ध्यान ॥ ॐ महान श्रीधुप्रवर्धन कुरुवापिन
 गां सिंहवाहनी वधुर्मुकाधनी मूलरुद्राखी
 विरूपाक्षे नमः नमः नमः पद्मरत्नध्वनी
 महालक्ष्मी लवयन् ॥ आ पा पू ॥ हं हं हं
 हान श्रीदेवी नमः स्वाहा ॥ नमः नमः स्वाहा ॥ ॐ
 हं वलीकाय स्वाहा ॥ सिंहनाथाय स्वाहा ॥ महा
 नरैवाय स्वाहा ॥ पद्मवर्धनैवाय स्वाहा ॥ प
 मनागनाय स्वाहा ॥ दिव्यरूपिणीय स्वाहा ॥

वनिग्रकृष्णाय स्वाहा ॥ महेश्वराय स्वाहा ॥ व
 नवक्राय स्वाहा ॥ महासिद्धिय स्वाहा ॥ महेंद्रप
 र्वनाय स्वाहा ॥ हमवती नदिनाय स्वाहा ॥ किं
 सिकल्लसमस्वानाय स्वाहा ॥ द्वादशकपालाय ३
 स्वाहा ॥ नक्षिपासिद्धाय स्वाहा ॥ नमः नमः
 सिय स्वाहा ॥ पूर्वहृदय हृदयैवाय स्वाहा ॥ स
 फवानाय स्वाहा ॥ पूजा ॥ ॐ महालक्ष्मी ॐ
 नमः नमः नमः नमः ॥ स्वायं विरूपाक्षे नमः
 रुद्रसिंहवाहिनी ॥ ॥ वसि ॥ ॥ ॐ नमः नमः
 कादवी धूमवर्धनैवाय स्वाहा ॥ रुद्रवसि गुरु २ ख ख स्वाहा
 हं हं स्वाहा ॥ नमः नमः ॥ रुद्रमा ॥ रुद्रमहावली

पूजा ॥ अथ मध्यमयमवसिपूजा ॥ किमहा
 उंदक्रिहास्यान्दिमिहकृवर्त्महावीर्यप्रतापी
 पतिप्रतायध्यानपूष्यंनमस्तुते ॥ मध्यपानाउं
 श्रीग्रीहंरुः प्रतायसर्वविघ्ननाशय २ कुरुट्खा
 हा ॥ धूप ॥ यंप्रतादिप्रमल्लोकदवगन २ कुरुट्
 खाहा ॥ ॥ धनजाय ॥ उं श्रीगमित्यः सुखा
 वानिगकुरुकुरुट्खाहा ॥ धन २१ ॥ निनाउ
 जन ॥ अथ ध्यान ॥ नमोदक्रिहास्यान्दिमिपु
 ताधीपतिर्जन्मनाजामहावनं ॥ कुरुवर्त्महा
 वीर्यप्रमुखवद्भुजाधनः ॥ कमदनुधाविशव
 वमहीषासनस्त्रिणा नूधीनमदकुरुसद्भुधंपी

यनं खजयनमुधार्यनः ध्यात्वाहावयन ॥ नृपा
 पू ॥ उंदक्रिहाधियनस्वाहा ॥ प्रताधीपतस्वाहा
 कुरुवर्त्मयस्वाहा ॥ कमदनुधनायस्वाहा ॥ पाश
 धनायस्वाहा ॥ सर्वप्रताधीपतस्वाहा ॥ श्रीगमिदाः
 धकंदनायस्वाहा ॥ सर्वमानधनरयप्रसमनाय
 स्वाहा ॥ पूजा ३ ॥ उं कुरुवर्त्महावीर्यवैजयंत
 लधनं ॥ नमो नियागधनं वैवर्त्मनाकनमास्तुते ॥
 नम्यहा ॥ वसि ॥ उंदक्रिहाप्रताधीपतियः सर्वर
 यद्वत्तु श्रीगमिपिजगन्निर्ध ॥ उंदवसिगृह्णस्व
 खखाकिं २ उं श्रीकुरुट्खाहा ॥ ॥ उं श्रीकुरु
 नाकस्वययूजा ॥ धनधनयूजा ॥ जाय ॥ मध्य

अगतिर्यः सुखावतिगं कुरुं कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ १०८ ॥
 एगवन् सर्वविद्या मा कुरुं द्यादि ॥ आ पा य ॥ अस्मा
 कूलं मृगाय स्त्राहा ॥ अगत्याय स्त्राहा ॥ मामासह क
 लं स्त्राहा ॥ सर्वप्रगव्यं कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ वन्धुवर्ग
 कूलं स्त्राहा ॥ कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ अज्ञानदं अयं कुरुं रुट् स्त्राहा
 ॥ गुरुप्रतिपीठाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ अग्निदग्धा व. वी
 नहनाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ सिंधु व्याघ्रहनाय स्त्राहा
 आत्मापनाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ अवनवत्सनि कुरुं रुट्
 धाय. रुग्णप्रगपि न्नाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ नोनवथ
 प्रगनाकगगाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ नवकय. सर्वक. प
 सुयानिगगाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ दिव्यनविकरुमिह

पितृनां वीधनाय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ यद्ववर्गमृगाय
 व. माहवर्गवयमृगा सुन्यसुभनवन्धुय कुरुं
 रुट् स्त्राहा ॥ अमगर्हीयहाताहानय कुरुं रुट् स्त्राहा
 पू. ना. ३ ॥ उं मरु २ महामरु सर्वदूर्जनविमाव
 नसुगतिप्राफय. विष्णुधनराजाय नधगताया
 हं सत्यकं वृद्धाय नमः ॥ १०९ ॥ विष्णुध
 य २ सर्वकर्मावनशविष्णुधनिय कुरुं रुट् स्त्राहा ॥ न
 हामृगमहाधालासुहावेगवनीनदीः सुहाम
 सययनं निर्यगं वृद्धं प्रहमामिहं ॥ निलयादिर्य क
 ल्यैव प्रगदवा सुमानना उतीर्णवकांगानं गं प्र
 मं प्रहमामिहं ॥ वसि ॥ उं दक्रि (१) सर्वप्रतापपरा

यसर्वानीष्टभूगतिरुयपीतायुष्मतिर्यथावः
 प्रभववनी. तावकावप्रभवयनाभय. कुरुमानस्य
 नायूनावाहनेस्वर्यशुभसंरुसयाकथ. सर्वपुन
 रुयनिवावनाथं दंदवलिगृह २ पुनमूर्तिताद
 नमयंवलिनीधीनमत्स्यमासदधिदृग्धमदकसस
 हिमन. भृगुशाय. गुरुहादववाहितपुनस्कानाक
 वप्रायकामनार्थं दंदवलिगृह २ रंज २ खखखा
 हिंरंरुद्व्याहा॥ तर्प्यन॥ कं ॥ धनहाकमयपूजा
 नाहिनूय॥ किमहा॥ ॥ ॐ श्रीब्रह्मसूक्तमय्यक
 दवधिपिगृमानवा॥ यंकविसमावर्तमयादरुन
 मायनः इतिमायाकुसर्वसकृप्यनत्वारविमूका

स्यपितनस्तस्यनादनपुनस्यनस्यमहात्कन. कवापि
 नविद्यत. नानापुनमिसादव्यागयाभिसमीमूकय
 तिथिमरुादिमूनस्मितं. आदिगन्धादाधनंत्तपुन
 नमामिह॥ त ॥ कं ॥ धनकर्मवलिहलसाकर्मपू
 जा॥ जाप. ध॥ ध्यान॥ ॐ निमहेनवायः ॐ विनिश्
 किनाकवूयनमूखिकाकुसर्वसमिमंकनष्टज्ञान
 सव्यः नक्रववाहादिनीश्रीश्रीहं ध्यानपूष्यनमस्तु
 तं॥ पुनकिमहा॥ नमानिगाकप्रवर्भूगृहवाहनध
 सोनाष्टदत्तमह्वं. अनिश्चयायध्यानपूष्यनमस्तु
 तं॥ मध्यापान॥ ॐ श्रीश्रीहं हवनाग्निविघ्ननाभाः
 यरंरुद्व्याहा॥ धूप॥ ॐ अनिश्चयायसहयाग्नि

न्यामोवाष्टसार्कश्रवण २१ रुद्रस्वाहा ॥ धनजा
 प ॥ कुंभनिश्चयाय रुद्रस्वाहा ॥ २१ ॥ निमाजना
 भान ॥ रुद्रवर्च रुद्रमास्यधनं वरुगुरुधनं
 शिखरवाना ॥ गृधवाहनं लोनाष्टदंष्ट्रधनं का
 म्धयलपयसागर्हसंरुतं नवांभनिमूर्तिराव
 यत् ॥ ३१ पा पू ॥ कुंभनिश्चयाय नमस्वाहा ॥ रु
 द्रवर्चयस्वाहा ॥ आदित्यपूजाय स्वाहा ॥ वरुगुरु
 जाय स्वाहा ॥ शिखरवानधनाय स्वाहा ॥
 गृधवाहनाय स्वाहा ॥ लोनाष्टदंष्ट्रवाय स्वा
 हा ॥ मृष्टम्याजायाय स्वाहा ॥ महिषीनक्रयाय ३
 स्वाहा ॥ काम्धयपूजाय स्वाहा ॥ ॥ पू. ना. तु. ॥

शीन्दनीलनविनाश्रुतिवानमूर्ति कल्याणवाजनयी
 मनुसैमवृय कम्भः ॥ लोभनमस्तु रुवमारुवरुतका
 नी लोकविभनकदम्भनववद्यराकि ॥ वसि ॥ कुं
 रुद्रवर्चभनिश्चयाय रुद्रदंष्ट्रसायमायउदनमृ
 यवसिगुरु २ रुद्र २ जिघ्रंभूपपीवरुपानं ममसर्व
 सत्त्वानाकेदुःखादयसर्वविष्टाहन २ कुं मृद्रुद्र
 स्वाहा ॥ ॥ धनरुद्रमाननं अर्घविद्य ॥ अद्यादि ॥ ॥
 कुंभनिश्चयाय दकिनाहिमूखाय लोनाष्टदंष्ट्र
 वाय मृष्टम्याजायाय महिषीनक्रयाय काम्धय
 ग्वयाय गुरुजायाय लोपीरुद्रस्यप्रजायतिद्व
 नाय मृकात्यरु सोहवाय सूर्यपूजाय मृयागर्ह

संरुगाय. इमिदमिदविषसंरुगाय. कमलप्रायक
 कोस्यदवताय. नीलवागपूष्यगन्धपद्मविगण्डिः
 गाय. कूर्मवधसमानूताय. दवदानवगंधर्वकूल
 सुमहीताय. भूवतनररुगवंमनूष्यानांहितार्थय
 दंमक्रतपूष्यधूपवसिगृह्णतां. नमस्तुभयस्यकी
 यतस्तस्यप्रीतिकर्तागुणभक्तिरूपष्टिकृत. कुरुमा
 नस्य भ्रातृनाहंस्वयमनाहिसिक्तकामनार्थम
 निरुवायमूर्ध्वप्रतिष्ठस्वाहा॥ ॥ गीतपूजाभक्त्या
 ॥ ॥ धनं नृणावसिपूजा॥ किमहं॥ नमानिः
 महेनवाय। विविकिनानेनृपत्तमेनाष्टदत्तमहवा
 यध्वानपूष्यं नमस्तुभं॥ मध्वपान॥ कीर्त्तनं हं सो

नाष्टविष्णुनामयइंद्रंरुटस्वाहा॥ धूप॥ नीलमहेनवा
 यमृवतनरभीपुंइंद्रंरुटस्वाहा॥ ध्यान॥ कुं विवित्र
 किनाकनूपायमुखिकानुसुर्मध्वमिमं कनरुं ग
 तकंसव्य. नक्रतववाहादिनिभाविइंद्रं ध्यानपूष्यं न
 मस्तुभं॥ आ. पा. पू॥ निमहेनवाय नमस्वाहा॥ कि
 लिं किलायस्वाहा॥ किं विवि किं विनाकनूपायस्वाहा॥
 उच्छिष्टविष्णुविनामयस्वाहा॥ कनूरयमात्रीयस्वाहा
 महावमात्रीयस्वाहा॥ आवाहनीयस्वाहा॥ महाआवा
 हनीयस्वाहा॥ उच्छिष्टरुं नवादिस्तकनयत्री वायं तान
 मस्वाहा॥ पू. ग. व॥ नृपगन्ध॥ वसि॥ दिग्गप्रदिः
 मवायुविषमिवउदियमहाविक्रयाकवि. क्राटना

जायनेलाकप्रसाधकायविश्विकर्मनाजाय.सर्वा
 पदवनाभय.नधनीपूप्रभाकायगाकिइन्द्रपूष्टि
 कनूइंदुस्वाहा॥ नम्यन॥ क॥ ॥ धनदुधनापूजा
 ॥ ॥ नमस्तुपंचाकिन्यादियकेवर्हयध्यानपूष्य
 नमस्तुग॥ मद्ययान॥ क्रींथीइंह॥ भूप॥ पंचेजाकि
 न्यादिदवीश्रवतनरशीपुंइंदुस्वाहा॥ ध्यान॥
 नमस्तुपंचेजाकिनीसर्वजाकिनीदवतागलावनं
 विमूडमासा.वज्रमाताकलसातस्तु.पंचेस्म
 दि॥ ध्यामंतसाधन.घुघुविस्मिन्निवताहसित
 नुगवनाकस्यां.वज्रवानासावेनावनादिजाकि
 नस्तुध्यानपूष्यनमस्तुग॥ न्यापाप॥ जाकिनी

यस्वाहा॥ नानायस्वाहा॥ खनुनीहायस्वाहा॥ नृपि
 होयस्वाहा॥ पं.ना.पु॥ नमस्तुजाकिनीनामनथाय
 ध्यानमानमः॥ नृपिनीखनुनाहिकनमः॥ वसि॥ पं
 केजाकिनीभूदिसकसयविवायथसूदंवसिगृह
 सुंकरइंदु॥ क॥ ॥ धनमूभनदंपूजा॥ धूमवर्त
 महावीनंशुक्रयनिसर्वद्वयकननस्तु॥ मद्य॥ क्रींथीइं
 हं॥ भूपं॥ महाभमभनमहावीनंइंदुस्वाहा॥ ध्यान॥
 कुसमकभमभनवागिनंखजयाभधवंमदाभमभन
 रंनवंहावयत॥ न्या.पा.पू॥ वज्रग्रहावस्तुभनायस्वा
 हा॥ ग्रहावस्तुभना॥ कालांनस्तु॥ कलंकस्तु॥
 नृदहस्तु॥ लक्ष्मीवस्तु॥ धालाधकस्तु॥ किनी
 किलस्तु॥ पं.ना.पु॥ ललानकवास्तुधेवीपस्तुभन

नाकसूनविष्णुष्टं गृह्ण २७ आदय २ किं धूपं पुष्पिच
 नुपानं ग्रंथिं ग्रंथं महाहवनम्बनाथयगदापनयं रुद्र
 स्वाहा ॥ गणेशाय नमः ॥ ॐ महाकानध्वनवाहनीकार
 सिकसालिककासिबतासि सिद्धिपामि वल्लुव
 नी-वृद्धं नाना नमः पदं उद नमये वसिष्ठ २ रुद्र
 मम सर्वसत्त्वानां विघ्नमावय २ सर्वदोषं रुद्र स्वा
 हा ॥ महाकालवसि ॥ कृमानमिखिवाहिनी वृद्धं व
 सिष्ठ २ रुद्र २ पिव नुपानं किं धूपं ॐ आरुद्र
 रुद्र स्वाहा ॥ कृमानवसि ॥ ॐ पिग्मवीप नृमवसि म
 म सर्वदोषं सर्वसत्त्वानां सर्वोपद्रव नागहयप्रम
 मय वृद्धं नाना नमः पदं वसिष्ठ २ रुद्र २ खखरवाहिं २

किं धूपं पुष्पं पिव नुपानं ॐ आरुद्र रुद्र स्वाहा ॥ वदुषाज
 ननस ॥ धुतनाष्टा महानागा लोकपाला महर्षिकाः गी
 धर्वाधीपय प्रष्टा गधर्वा सहसेन्या आगच्छ २ वृद्धं वसि
 गृह्ण २ समयमनूस्म नमः किं पूष्टी नकां नूद्रुद्र पूर्वस्था
 दिशि स्वाहा ॥ पू ॥ ॐ विरूधका महानागा लोकपाला मह
 र्षिकाः कृमानाधीपय प्रष्टा नूद्रुद्र सहसेन्या ना
 गच्छ २ वृद्धं वसिष्ठ २ समयमनूस्म नमः किं पूष्टी क
 रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ वकीन ॥ ॐ विरूपाक्ष महानागा लोकपाला
 महर्षिकाः नागधीपय प्रष्टा नागनां सहसेन्या
 आगच्छ २ वृद्धं वसिष्ठ २ समयमनूस्म नमः किं पूष्टी क
 रुद्र रुद्र पयिमस्यां दिशि स्वाहा ॥ पयिम ॥ ॐ वेधव

ग्रहवलि॥ सूर्यसाममहीमयवृक्षदवगुनरुतुः॥
 मनिष्मगुहमाइककुनानादिदेवगा-नागयक्र
 गन्धर्वीसुनगनूकिंनव-महागगादिरीः सह-आ
 गच्छागच्छ-वृंदसर्वसंज्ञकंदसि-गृह्णरखादय
 पिवरमसत्त्वानांनकाकूर्वकु-ं आहंरुट्स्वाहा॥
 र्यवनकावलि॥ ॐ नमः प्रगितना-साहस्रप्रमर्द
 नीमहामाय-भीमवती-मक्रानूसावभीविशाधी
 पतिवृंदसर्वसंज्ञकंदननयवलिगृह्णरखाद
 यरपिवकुवलिवाग्वीकिप्रकुधूपः मसर्व
 सत्त्वानांनमायूयानाहृक्कन-सर्वरुनपिगम-अ
 दय-पीठाहनरदहृरहसिंकनूसर्वदाहंरुट्
 स्वाहा॥

स्वाहा॥ मूलपीठकवलि॥ ॐ नमः शूलपीठना
 यक्रमहिगहनदज्ञाय-वन्दकाकिमहिप्रहा
 य-खर्जपूष्ककयगहमाय-गृह्णरखरखाहिं
 रुट्स्वाहा॥ अज्ञांगवलि॥ अज्ञांगकयूपनपमस
 मविधसुनकनी-सुसेन्यपनिवातसहिगायक
 वृरवृंदवलिगृह्णरपनसेन्यशूनकमूलन-ग्रह
 वक्षरखगन-ं आहंरुट्स्वाहा॥ उग्रवलि॥
 ॐ मगाउग्र्यायमृहनाभय-दीर्घायकामना
 नक्ररहंरुट्स्वाहा॥ मृगवलि॥ ॐ मृगः
 यववनीय-गावकावमृहयनाभयवृंदव
 लिगृह्णरहंरुट्स्वाहा॥ सार्वभौमवलि॥ ॐ न

गानमूरव विरुटनूरव एममूरवया प्रमूरव
 उरुमूरव काकमूरव गृधमूरव गरुडमूरव
 स्नानमूरव गोकुलमूरव रत्नमूरव धनमूरव पि
 श्रवमूरव सप्तदीपानसह ॥ १०० ॥ दंपुष्य धूपदी
 पमूरव सर्वसंयुक्त गृह २ रुद्र २ पिवर २ ममस
 र्वसत्ता ना के कृमा नाग्य कृ ३ स्वस्वयन कृ ३ उं
 श ईं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ कृता वल्लि ॥ पिगावली पव
 दनीतागनीय ॥ दवली गृह २ उं श ईं रुद्र
 स्वाहा ॥ ० ॥ धनय के पुवाने पूजा ॥ ० ॥
 धनं लिख प्रपूजा ॥ पशुतर्पण ॥ ०० ॥ दय धाव
 र्पण सुतर्पण यमि ॥ मरुतर्पण या क ॥ ॥ ॥
 मय श्री ईं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ कृता पूजा ॥

र्वपुत्रया कवृक्षा हव हित्वा इर्न निरुद्रक ७
 र्वाव निमवा प्रया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नां नृत्ता दानेन पून जमान विद्यता ॥ सखाव
 निग रुद्र स्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जा पूय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 यथा नाम पशु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मि ॥
 क स वा रुगा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥
 ॥
 ॥

॥ कृता पूजा ॥ तापनः ताप

निधायः सं ३ संसात्रकृदं घूलिगघूलिगः ५
 र्जकृदप्रवलयः ॥ ३ ॥ काननादयिरुडानवि
 वजयसुत्रसंश्रामविनः पं ३ पापनालगरुग
 वनिवनदसिद्धिवन्दनमस्तु ॥ १ ॥ वं ३ वं ३ वं
 मुदृष्टवकिगवकिगः ववेत्तादृग्निनगुः
 कं ३ कामनूपप्रहसिगवदनः खजपागमधन
 किः दं ३ दं ३ पानिगमवदिमीदिमः दिनिमा
 लायमंगः ॥ ३ ॥ गिनकं जयवुविजयगः
 सिद्धिवलयनमस्तु ॥ २ ॥ घं ३ घात्रनूपघूघू
 लिगघूलिगः घघनावावघार्यः हां ३ हासन्
 पयिरुडानधविगः खवनं कृष्णालः दं ३ दं
 गनाथसकलजनहिने नस्यदहविमव

कं ३ कालनादेसकलसहयहनः सिद्धिवन्दनम
 स्तु ॥ ३ ॥ वं ३ वं ३ मधायं गुमतिहवनगः ना
 लपागावमस्तु ॥ कं ३ कालधायं धकिनिध
 किगः यस्यहस्तं निगुनः कं ३ दृग्त्रूपगमनि
 खवनगं गत्यदवस्त्रनूपः मं ३ मं ३ कसिद्धिस
 कलसहयहनः सिद्धिवलयनमस्तु ॥ ४ ॥ ॥ ३ ॥
 कालसदप्रहसिगमहमा वामहस्तकपात्रं
 खं ३ खद्वंगहस्तं गुमदिमिदिमः मनुमाः
 लाहृगमा ॥ कं ३ कुरुनीयः हं ३ हसिगहाः
 सिर्गमीमनादः आयकमस्तु सिद्धिरुगव
 निवनदसिद्धिवलयनमस्तु ॥ ५ ॥ कं ३ का

सिकालवृषीनवपि. सिगमखि. सांडवोड
 मिजिफा॥ इंकालि धानना दपवयज्जनिः
 सिधकालविगंयगा कि. प्रकजानासि
 याग. वृत्तवृत्तकाभिनी के शुक्रभुः कंकालि
 कलवापी लणवमी ववदसिद्धिवलुनमस्त
 ॥ ७ ॥ वं ३ नावववोडवृत्तवामूरवे दीर्घ
 जिह्वाकलाल॥ पं ३ पमवृत्तसमयविज
 यगं गुरुदंठानिसूर. सूरसयामवीनः
 जयविजयगं धृष्टिहावकका. श्री ३ का
 लनादरुगवणी ववद. सिद्धिवलुनमस्त
 ॥ ७ ॥ मं ३ काववृत्तममिजमममा. मय

नील

७

मालाग्रमस्त॥ कं ३ कालधारी घूचूरी गघः
 विगं धूधुमावी कूमावी॥ धृ ३ धूमवः सूर्यम
 नितवनकं कालघातापी गवी. गं ३ विडावृ
 धममरुयहृद. सिद्धिवलुनमस्त॥ ८ ॥ वं ३
 वृद्धवृद्ध वृत्तवामूरवे दीर्घजिह्वाकनाय कं
 ३ कुरुवृत्त समयविजयगं. सूरदकदिनीस
 र॥ सूरसयामवीनरुयतिविजयगं. सिद्धि
 वलुनमस्त॥ ९ ॥ धृतिवृत्तकालव॥ ॥
 कं ३ काववृत्त इव २ सकलं हनवनालहृद. श्री
 श्रीरुमई २ दमदिममधिसंकालवृत्तासिमने
 प्रकलनेपिगमयेः उयगवगिसदा कैय नाक
 मनालः श्री ३ वृत्त २ ममरुयहृद. प्रायुव

कृष्णपात्र॥ १ ॥ वं क्रीं श्री हसरु ह३ हसिग
 विवगंरुसुगंरु पीदांगी हसमा नूटुमनी उ
 मनीयममदुनिर्घागं घागेदु हनिपमिगव
 वसध्व वस्रवंद सुवन्दः सर्वहसर्वमय वि
 रुवचनमिग वंम्ररुवनमस्रुगं॥ २ ॥ ज्ञां किं
 क्रीमानस्रुवरुयहनही सर्वरावविशव॥
 निर्मरुमूकिमार्गवमरुषरासन सामसूर्या
 मिगंरुः नूयस्रुसवमूक अयनपनपन ह
 नमार्गप्रधान विनयमूववन्द अकूलकूल
 कूल श्रीमाहवनीनमस्रु॥ ३ ॥ विं विरुह
 कवविवववदकिः ई३ द३ म३ ई३ श्री हाक
 ई३ साविदान अनहननिवद हकिमूकिप्रदाक॥

हं३ साविधान नव२ गहनसिद्धिद वा ममाः
 र्गं॥ ज्ञां किं हंयं कूसाध ककिरुविषयविनर
 डनमस्रु॥ ४ ॥ हकाकायाददः खंसमिगरुव
 रयं सर्वविघ्नाककायः ग्रं ग्रिं ग्रं यं गं गर
 गद्यपमिगम सिद्धिसर्वार्थदायः॥ नुं गूं मूडा
 गजाकंगसपवनगम गीसुगानेकदर्कः नुं
 ई३ ई३ ग्रं गं सदिनदमूखधरविघ्ननाशन
 मस्रु॥ ५ ॥ श्रीं श्रीं श्रीं कूमात्री कहरुमधि
 न ककीयाननूमागः मूडासंलग्निरीम कूर
 रसगमग्रामगं गुरु गुरु॥ वजागसिद्धिना
 थ मनववनवयं गत्यश्रुप्रदाकः प्रका
 क वापीमध्यस्वपमिगदयदोमूदकानमस्रु

॥ ७ ॥ प्राविं वं वे क्वी दहन कूल गगन लव
 कथय वस्तु कि वा नय क ह निग क की व (६)
 अट सियूष्य वरु सुदनी काम नाश दान र क
 वीर गगन र क जन नाश नमस्तु (धरु गगन सु
 र क रिन गुष्क गुफ नमस्तु ॥ ७ ॥ प्राविं वं
 का ल तु (७) च ३ घटि न घर्घ व्या घु धा धः प्रा
 किं ऊं द न धीं न व ४ न व भ सर्व ह्य न प्र धान ॥
 घटि व क सु ग ग यू ग २ यू ग न वि कि न का ल
 मरु सर्व (७) न क धा न म द २ म क व व ज तु
 नु न मस्तु ॥ ८ ॥ प्राविं वं सु म सा न रु ग ४ ग
 ग र म गुष्क यानि सु म ड व जा धु व ज ह रु सु

वज्रहस्त २

व य नि व न द म न मा र्ग ग नू रं सु ग र सि धि
 दा ग ल ४ ल लि न या ग जा ल सु द नी का म न
 ध वि ध म वि ध ग ग वृ दि मा र्ग न मस्तु ॥ ९ ॥
 पि म क्रि न क क गी कि लि २ न व वे सा ड म ड
 रु मा (७) नृ मां र्म का ट न क न व पि सि न व न
 मो ड मो डा मि मो ड ३ काल ना द नृ न २ नृ न
 न धा व धा वां ३ हा स द वी स प्र न स रु ह नि
 ह न न मि न वा म लि क न मस्तु ॥ १० ॥ ३ क
 ल ना द र व र २ र व र र र व र्मा र्म र्म नृ मा र्म
 वृ र्म र्म र्म र्म र्म ४ ४ ४ ४ र्म र्म र्म र्म र्म
 र्म : ३ र्म र्म र्म र्म र्म २ व व नी रा धि नी
 व स म ड वी र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म र्म

महालक्ष्मीनमोः ॥ ११ ॥ ॐ मिमांसा ह्येका
 समाप्ता ॥ मन्त्रविमर्शना ॥ ॥ गुरुपूजा
 दक्षिणा ॥ पंचाङ्गना ॥ क्रमापन. सिद्धिमा
 हनी. सकलकलाय. दवयागजरा ॥ नित्य ॥
 धनसिलकाकाय ॥ समयावका ॥ ॐ मि
 हाकानविगय नष्टनागीका पूजाविधिस्त
 माफ ॥ वलिकाय ॥ राजनकर्या ॥ गुरु ॥
 यमस्तमनमरु ॥ नमोनवसिंहवीनकायाहक
 बांधुईकबांधुकर्मनिवाभु. धाल्यनिवाभु. क
 निसवभुवांधुवकिसवांधु. उरुनवाभुउरुनद

उभवि. पर्ववेवांधु. पर्वदुआलिदक्षिणवांधु. दक्षि
 हाइगावीपश्चिमवांधु. पश्चिमदुआनिवांधुका
 लनिश्वरंनिकालिकारवननिवावनिवावरुयाद
 धामदुआववजमाववजासिवा. श्रुनीकपूयः
 हनमरुविश्वकिलविल्लाः ककवा ॥ धा १ ॥ गुरु
 धपथनसादनयाया ॥



गुरुभाहारंरुदराहा ॥

ॐ नमोऽष्टाप्रतिसूत्राय ॥ स्वरावशुद्धा ॥ ४ ॥
 इति शुभ्यतानं वज्रपञ्चनसूत्रं पनिकूपा
 ज्ञानमथ विष्वक्वदो स्थितविष्णुद्वयात्
 कानिष्यन्नाह गवतिः महाप्रतिसूत्राय नमः
 कूपणमनुलाः पीतसितसर्वधर्मा स्वराव
 शुद्धाहं ॥ शुभ्यतानं वज्रपञ्चनसूत्रं
 ततोऽनन ॥ नीलनकचगुर्मुखो वा नमः
 सुयोत्रसूक्तं च कुवज्रगनस्वप्नवदनमूपावि
 गाः वामे वज्रवज्रपाणिनि लधनः ८ पशुभिः
 स्वधरावेष्टालं कृतजिन्नस्कास्तत्पर्यकस्थि
 ता ॥ श्रीमतिदविणवयत् ॥ पूर्वदिशि महासा

हसुप्रमंदिनीः स्वयं महामंशानूसा निधीः पृ
 ष्टमहाभक्तिवतीः वाममहामायत्रीः द्वितीय
 पटः ब्राह्मणादिकोऽष्टः काली कालरात्री
 कालकन्धी वगालीः प्रतापि विगाहनहाम्ब
 गाः नलमकुटिनः प्रतिसूत्रं स्वर्णिनेगा ८ पूर्वा
 दिक्वात्रेष्विषमकुसुमैः वज्राकुशावजापा
 णीः वज्रसूतावजावजापद्मावजावजाव
 लीलावलीवृता एव यत् ॥ जायः धूपः अ
 कंषेनः पूष्यः न्यासः ॥ एगवः श्रीमत् ॥ श्री ३
 पञ्चनका देवद्वी एगताली कायपाद्या च
 नमः नमः प्रतिकुलाहा ४५ धनी धूनजनाया

Handwritten text in a medieval script, likely Latin, on a heavily damaged, aged parchment leaf. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be in a different script or dialect. The parchment is discolored and stained, with visible wear and tear along the edges.

Handwritten text in a medieval script, likely Latin, on a heavily damaged, aged parchment leaf. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be in a different script or dialect. The parchment is discolored and stained, with visible wear and tear along the edges.